ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 137-139**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

सेवारत व असेवारत महिलाओं के किशोर बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 साधना मिश्रा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-18.07.2024, Revised-24.07.2024, Accepted-30.07.2024 E-mail : sadhanamishradwtc@gmail.com

सारांशः ***जन्म से मृत्यु की प्रक्रिया इस संसार में अबाध गति से निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिशु जन्मोपरान्त अपनी माँ के आँचल की सुमधुर छत्रछाया में विकसित होता है। वह क्रमशः बाल्यावस्था किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था का अनुसरण करता हुआ अन्त में बृद्धावस्था में पदापर्ण करता है। इसके बाद शरीर में स्थित अद्भुत आत्मशक्ति इस नाशवान शरीर को त्याग देती है। इस प्रकार जीवन प्रक्रिया का अन्त हो जाता है।***

मानव–मनोशारीरिक प्राणी है अतः विचारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन कर परिस्थितियों के साथ समायोजन करने के साथ–साथ वह विभिन्न परिस्थितियों को अपने अनुकूल निर्मित कर सकने की क्षमता अपने आप में विकसित करता है।

सर्वांगींण विकास का तात्पर्य है सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है, जो शिक्षा के द्वारा होता है। आज की शिक्षा बाल केन्द्रित है। बालक राष्ट्र की सम्पत्ति है तथा राष्ट्र के भावी कर्णधार भी है। शासन की बागडोर इन्हीं बालकों के हाथों आना है राष्ट्र का उत्थान एवं पतन इन्हीं के हाथों है। इस महत्व को ध्यान में रखकर सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है। मैगड्गल ने 14 मूल प्रवृत्तियाँ बतायी है तथा प्रत्येक के साथ एक संवेग का पूर्ण परिष्कृत सम्बन्ध बताया है। विकास के साथ संवेगो में परिवर्तन होता है। बाल्यावस्था को संवेगों के विकास की विशिष्ठ अवस्था कहा गया है, क्योंकि इस अवस्था में जो अनुभव होते है वह किशोरावस्था के संवेगात्मक विकास की नीव डालते है।

कुंजीभूत शब्द– संवेगात्मक परिपक्वता, आँचल, सुमधुर छत्रछाया, अद्भुत आत्मशक्ति, नाशवान शरीर, मनोशारीरिक प्राणी

जर्सीड ने संवेगात्मक परिपक्वता की परिभाषा बताते हुये लिखा है कि संवेगात्मक परिपक्वता का तात्पर्य व्यक्ति में स्वयं सहायता करने की क्षमता स्वतन्त्रता जीवन में सुख व दुख और उनका सामना करना होता है। संवेगात्मक परिपक्वता में कई गुण होते है ये गुण सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

पियर्स ने 1957 में माताओं के व्यवहारों के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि माताओं के व्यवहार का बालक के स्वभाव पर प्रभाव पड़ता है।

बेससटेंस ने 1960 अपने अनुसंधान में यह सिद्ध कर दिया कि बालकों के विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण के सम्बन्ध में माँ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

1972 में मटटू ने अध्ययन द्वारा बताया कि औसत बुद्धि के किशोर लड़के, लड़कियों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक समायोजन रखते है। मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोर वर्ग के बच्चें उच्च वर्ग के किशोरो की अपेक्षा कम अच्छा समायोजन रखते है ।

1985 में रंजना चौधरी ने एक अध्ययन में बताया कि अति आत्मविश्वासी व अल्प आत्मविश्वासी किशोरों की संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर था संवेगात्मक परिपक्वता पर बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक स्तर का भी प्रभाव पड़ता है। वैसे बालक पर माता–पिता दोनों का प्रभाव पड़ता है परन्तु बालक सबसे पहले माँ के संपर्क में आता है। माँ का योगदान बालक के व्यक्तित्व के कई अध्ययनों को स्वीकार करता है। आज स्त्री राष्ट्र व मानव जीवन की समस्याओं के परिणाम स्वरूप पुरुषों का सहयोग कर रही है यह बात विचार योग्य है कि स्त्री यह दोहरी भूमिका कैसे निभा रही है। इस दोहरी भूमिका में वह बच्चों पर ध्यान दे पा रही है या नहीं, क्योंकि इससे बच्चों का व्यक्तित्व प्रभावित हो रहा है। जेनको और माइकल ने अपने अध्ययन में बताया कि सेवारत महिलाओं के बच्चे पढ़ाई में अच्छे अंक प्राप्त करते है।

अपने यहाँ की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि महिलाओं का सेवारत होना उनके दृष्टिकोण को परिवार व समाज को किस सीमा तक प्रभावित करता है। शैक्षिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण स्त्री घर से बाहर जाती है उसका सेवारत होना उसके बच्चो को प्रभावित करता है या नहीं।

उपर्युक्त अध्ययनों का विवेचन करने पर ज्ञात होता है कि माता का सेवारत व असेवारत होना बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है इसलिए इस अध्ययन में सेवारत व असेवारत महिलाओं की सन्तानों के संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य–

1. सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सेवारत व असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिसीमायें–

1. इस समस्या में कानपुर शहरी की 100 सेवारत व असेवारत महिलाओं को अध्ययन के लिये चुना गया।
2. इस समस्या में कक्षा 9 से 12 तक के बालक तथा बालिकाओं पर अध्ययन किया गया।

परिकल्पना– इस समस्या में शून्य परिकल्पना ली गयी है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

1. सेवारत महिलाओं के बालकध्बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. असेवारत महिलाओं के बालकध्बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सेवारत तथा असेवारत महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श– इस समस्या में सविचार न्यादर्श का प्रयोग किया गया है इसमें चार विद्यालय लिये गये हैं–

1. सेवारत महिलाओं की 25 किशोर बालिकायें
2. सेवारत महिलाओं के 25 किशोर बालक
3. असेवारत महिलाओं की 25किशोर बालिकायें
4. असेवारत महिलाओं के 25 किशोर बालक

प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत समस्या में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है इसमे संवेगात्मक परिपक्वता के लिये यशवीर सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नों को 5 वर्गों में विभाजित किया गया है।

1. संवेगात्मक अस्थिरता 10
2. संवेगात्मक दमन 10
3. सामाजिक कुसमायोजन 10
4. व्यक्तित्व विघटन 10
5 .नेतृत्व हीनता 08

परिणाम एवं विश्लेषण–

सेवारत महिलाओं के किशोर बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता

न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)	
बालिकायें	25	103.7	18.08	3.5102
बालक	25	87.3	14.8	

0.05 स्तर पर 1.96 सी0आर0

उपर्युक्त सारणी में सेवारत महिलाओं के 50 किशोर बालक व बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 103.7 व 87.3 है तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 18.08 व 14.8 है तथा दोनों के बीच की क्रान्तिक निष्पत्ति 0.05 स्तर पर 3.5102 है जो कि उत्तरपुस्तिका केअनुसार दोनों में सार्थक अन्तर को प्रदर्शित करती है। अतः हमारी प्रथम परिकल्पना कि सेवारत महिलाओं के किशोर बालक बालिकाओं में संवेगात्मक परिपक्वता के अन्तर को स्पष्ट करती है, जो अस्वीकृत होती है।

परिणामों से स्पष्ट होता है कि सेवारत महिलाओं के बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता की अपेक्षा अच्छी है। संवेगात्मक परिपक्वता सामाजिक समायोजन का परिचायक है। परिपक्वता अधिक होने पर समायोजन अधि क अच्छा होता है। सेवारत महिलाओं के बालकों बालिकाओं की अपेक्षा बाहर पर्याप्त अवसर मिलते है जिससे सामाजिक सुसमायोजन अच्छी तरह से होता है और बालिकायें घर में ज्यादा समय बिताती है, इसलिये बाहरी वातावरण में कम समायोजन हो पाता है ।

सारणी नं० 2

असेवारत महिलाओं के किशोर बालकध्बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)
बालिकायें	25	106.5	15.2	3.16
बालक	25	120.5	16.1	

उपर्युक्त सारणी में असेवारत महिलाओं 25 किशोर बालिकाओं 25 किशोर बालाकों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 106.5 व 120.5 है तथा प्रमाणिक विचलन 15.2 व 16.1 है तथा क्रान्तिक निष्पत्ति 3.16 है जो दोनों के बीच सार्थक अन्तर स्पष्ट करता है। अतः हमारी दूसरी शून्य परिकल्पना असेवारत महिलाओं के किशोर बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में नहीं है अस्वीकृत होती है। अतः बालक बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर है।

परिणामों से स्पष्ट होता है कि असेवारत महिलाओं के बालको को संवेगात्मक परिपक्वता बालिकाओं की तुलना में कम अच्छी है क्योंकि असेवारत महिलायें घर में अधिक समय व्यतीत करती है। बालिकायें एक सीमित समय के लिये बाहर रहती है और अधिकांश समय घर पर ही रहता है अतः माता–पिता व वरिष्ठ सदस्यों की शिक्षा–दीक्षा एवं संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर सुधर जाता है। बालक प्रायः बाहर जाते है मित्रों एवं समवयस्कों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करते है। इससे सामाजिक समायोजन तथा संवेगात्मक परिपक्वता में पिछड़े जाते है।

सारणी नं० 3

सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं तथा असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)
सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकायें	50	104.5	19.00	2.34
असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकायें	50	113.5	19.00	

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

उपर्युक्त सारणी में सेवारत महिलाओं के 50 किशोर बालकध्बालिकाओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं का मध्यमान 104.5 तथा असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं का मध्यमान 113.5 है तथा प्रमाणिक विचलन 19.0 व 19.5 है तथा दोनों के बीच क्रान्तिक निष्पत्ति 2.34 है। अतः 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः दोनों समूहों के बीच अन्तर है क्योंकि दोनों के समूहों में अन्तर है। सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में और असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में और असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है। सारणी नं0 3 के परिणाम के अनुसार असेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की अपेक्षा सेवारत महिलाओं के बालक/बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता अच्छी है। पिता के साथ सेवारत महिलायें घर के बाहर रहती है, जिसके कारण बालक/बालिकाओं को स्वयं प्रत्येक स्थिति को समझने के लिये नेतृत्व करने की क्षमता रखते है। जबकि असेवारत महिलाओं के बच्चे माँ पर निर्भर होते है। अतः संवेगात्मक परिपक्वता तथा नेतृत्व की क्षमता का गुण कम पाया जाता है।

निष्कर्ष– सेवारत महिलाओं के किशोर बालक/बालिकाओं में अन्तर का मिलना इस बात पर निर्भर करता है कि सेवारत महिलायें समाज में जाती है और वहाँ समायोजन करती है। अतः उनमें संवेगात्मक परिपक्वता ज्यादा होती है और वह समाज में अपने संवेगो द्वारा समायोजन कर लेते हैं। असेवारत महिलायें घर के कार्यों में लगी होने के कारण समाज में हो रही घटनाओं से कम परिचित होती है। अतः उनके किशोर बालक/बालिकायें संवेगो को कम समक्ष पाते हैं। अतः उनमें संवेगात्मक परिपक्वता कम होती है। अतः वह नेतृत्व में पिछड़ जाते हैं।

सुझाव– किशोरावस्था जीवन की अधिक दबाव की अवस्था है। क्योंकि इसमें शारीरिक मानसिक और बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास बड़ी तीव्र गति से होते हैं अतः उन्हें उचित मार्ग दर्शन की आवयकता होती है।

1. किशोरों के साथ अभिभावकों को लिंग भेद का भाव नही रखना चाहिये तथा इस आधार पर उनकी आलोचना नही करनी चाहिये।
2. व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर उन्हें उचित मार्ग दर्शन देना चाहिये।
3. किशोरों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार किया जाना चाहिये।
4. किशोरों को नैतिक सामाजिक व धार्मिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओबराय, इसेंसियल्य ऑफ कम्प्यूटर।
2. बाजपेयी एस.आर., सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण, किताब घर, कानपुर ।
3. बुच एम.वी., ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन।
4. गैरेट एच.ई. शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी का प्रयोग, वाकिल्स, फेफर एण्ड साइमन्स लिमिटेड, बम्बई ।
5. जग्गी वी.पी. इन्ट्रोडक्ट्री कम्प्यूटर साइंस, एकैडिमिक इण्डिया पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. जैन वी.के., कम्प्यूटर फार बिगनर्स, पुस्तक महल, नई दिल्ली।
7. कपिल एण्ड कं०, अनुसंधान विधियाँ, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।
8. पत्रिका, (अ) विज्ञान प्रगति, मई 1997 (ब) एक बुक ऑफ कम्प्यूटर (एस. पी. कुरक्षेत्र)।
9. शर्मा आर. एन., शिक्षा अनुसंधान।
10. शर्मा एम.सी., कम्प्यूटर परिमाप, बी.पी.बी. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
11. वर्मा प्रीति एवं अन्य, मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी।

*****